3

पढ़ दो एक कहानी

लता पाण्डे*

कहानी बच्चों को आनंदित करती है। कहानी सुनने के दौरान बच्चों में अनेक कौशलों का विकास भी होता है। बच्चों को कहानी अगर पढ़कर सुनाई जाए तो बच्चों के लिए अनुमान लगाकर पढ़ना सरल हो जाता है। किताब की दुनिया से भी उनका परिचय होता है। कहानी की किताब पढ़कर सुनने के बाद उनमें यह इच्छा उत्पन्न होती है कि वे स्वयं उस कहानी को पढ़ें। पढ़कर कहानी सुनाना किस प्रकार बच्चों को स्थायी पाठक बनाने की ओर ले जा सकता है, यही इस लेख का विषय है।

कहानी बच्चों को अनूठी-खुशी देती है। कहानी लोक में विचरण करते समय न तो उन्हें परीक्षा का डर होता है और न ही किसी भी प्रकार के नियमों को याद करने का हौआ। कल्पना लोक की सैर कराती कहानी न केवल बच्चों का मनोरंजन करती है बल्कि उन्हें बहुत कुछ सिखाती भी चलती है। कहानी सुनते समय बच्चों में उत्सुकता बनी रहती है कि आगे क्या होगा। इसी उत्सुकता के कारण कहानी सुनते समय बच्चे धैर्य से सुनना सीखते हैं। बच्चे ध्यानपूर्वक कहानी सुनते है। जिससे उनकी एकाग्रता से सुनने की शक्ति पैनी होती जाती है। कहानी सुनने के दौरान कहानी के पात्र, घटनाओं तथा घटनाक्रम को बच्चा समझते हुए याद रखता है। कहानी सुनाने की सफलता की सूचक यह बात होती है कि कहानी सुनने के बाद बड़े चाव से वह दूसरों को सुनी गई कहानी सुनाना भी चाहता है। इस प्रकार कहानी सुनने की प्रक्रिया में बच्चों की स्मरण शक्ति का भी विकास होता चलता है। कहानी सुनने के दौरान बच्चे कल्पना करते हैं, तर्क करते हैं, अनुमान लगाते हैं, घटनाओं को क्रम से लगाते हैं, विभिन्न तथ्यों, पात्रों एवं घटनाओं में संबंध स्थापित करते हैं, भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाते हैं, विगत की घटनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार कहानी सुनने-सुनाने की प्रक्रिया के दौरान अनेक कौशलों का विकास होता रहता है।

कहानी एक अर्थपूर्ण सामग्री होती है जिसके कारण बच्चे उससे जुड़ पाते हैं। बच्चे कहानी को कई स्तर पर सुनते हैं और बौद्धिक, भावानात्मक तथा सामाजिक आदि स्तरों पर उससे जुड़ते भी हैं। कहानी बच्चों की दुनिया को विस्तार देती है। कहानी की दुनिया बच्चे के लिए एक सार्थक संसार की रचना करती है। इस दुनिया में थोड़ी देर विचरण कर ही वे

* रीडर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016

शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग से परिचित हो जाते हैं। कहानी की किताबों के प्रति ललक उत्पन्न होती है। कहानी पढ़ने में आनंद मिलने पर उनसे सामने पढ़ने का उद्देश्य निर्धारित हो जाता है।

कहानी सुनने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों को यह भी अदांज़ होने लगता है कि कहानी शुरू कैसे होती है, आगे कैसे बढ़ती है और कहानी का अंत कैसे होता है। कहानी सुनने के दौरान अपने अनुभव के आधार पर वे आगे होने वाली घटनाओं के बारे में अनुमान भी लगाते चलते हैं। कहानी की बुनावट की यह समझ बच्चों को कहानी समझने तथा स्वयं कहानी बनाने में सहायक होती है।

कहानी पढ़ने की ललक जगाती है

बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए पढ़कर कहानी सुनाने से अधिक बेहतर तरीका और कोई नहीं। जो कहानी बच्चे पहले से जानते हैं उसे खुद पढ़ना भी वे चाहते हैं, पढ़कर दूसरों को सुनाना चाहते हैं, उसके बारे में कुछ लिखना चाहते हैं, अपनी इच्छा से कहानी को आधार बनाकर चित्र बनाना चाहते हैं। यदि पढ़कर सुनाई गई कहानी में बच्चे को रस आता है तो बच्चे में स्वत: इच्छा उत्पन्न होती है कि वह यह कहानी स्वयं पढ़ सके। इस तरह की रोचक कहानियों की अन्य किताबें अपने आप पढ़े और दूसरों को सुनाए। बच्चों के लिए सार्थक शिक्षा का इससे सशक्त माध्यम और क्या होगा? हम सबका अनुभव है कि जिन बच्चों को माँ-बाप या अध्यापक पढ़कर कहानी सुनाते हैं, वे पढ़ना जल्दी से सीख जाते हैं। बच्चे के सामने किताब रखकर कहानी सुनाने का आपको भी अनुभव होगा। खासकर ऐसी कहानी जो बच्चे ने पहले से सुन रखी हो। आपके पढ़ने से पहले ही बच्चे अगला शब्द या वाक्य पढ़ लेते हैं। अक्षर, शब्द, वाक्य एवं चित्र की पहचान बच्चे के लिए कितनी सहज हो जाती है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि बच्चा समझकर पढ़ना सीख रहा है।

वास्तव में पढ़ना सीखने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे वही चीज़ पढ़ें जो उनके लिए अर्थ रखती हो। बिना किसी संदर्भ के वर्ण पहचानने, बारहखड़ी याद करने तथा शब्दार्थ करने से कोई लाभ नहीं। हम सब जानते हैं कि वर्षों ऐसा करने पर भी बच्चे समझकर पढ़ नहीं पाते। उपयुक्त, मनोरंजक, सार्थक और चुनौतीपूर्ण संदर्भ नहीं होंगे तो बच्चे पढ़ना नहीं सीखेंगे।

एक बार कहानी पढ़ने के प्रति रुचि बच्चों में जग जाए तो वर्णमाला और बारहखड़ी पढ़ने की जिज्ञासा खुद-ब-खुद उत्पन्न हो जाएगी। जिज्ञासा ही सीखने का पहला चरण तथा सीखने की पूर्व आवश्यकता है।

इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों में पढ़ने के लिए ललक जगाने तथा उसे स्थायी पाठक बनाने के लिए कक्षा में उसे पढ़कर कहानी सुनने के अवसर दिए जाएँ।

बच्चों को पढ़कर कहानी सुनाना तभी सही मायनों में सफल होगा जब सही ढंग से कहानी पढ़कर सुनायी जाए। यह अनेक बातों पर निर्भर करता है जैसे पढ़कर सुनायी जाने वाली कहानी का चयन, कहानी सुनाने का तरीका, कहानी

सुनाने के दौरान तथा बाद में की जाने वाली गतिविधियाँ। आइए, इन्हीं बातों पर गौर करते हैं।

कैसी हो कहानी की किताब

- रंग-बिरंगे चित्रों वाली किताबें सहज ही बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। इसीलिए बच्चों को पढ़कर कहानी सुनाने के लिए किताब चुनते समय ऐसी किताब चुनें जो चित्रों से भरपूर हों। साथ ही ध्यान रहे कि चित्र जीवंत हों।
- कहानी बच्चों के स्तर के अनुरूप हो।
- भाषा सरल तथा सरस हो।
- वाक्य छोटे हों। शब्दों तथा वाक्यों का दोहराव हो ताकि बार-बार उन्हीं वर्णों तथा शब्दों की आकृति देख बच्चा अनुमान लगाकर स्वयं पढ़ सके।
- कहानी जितनी छोटी और मनोरंजक होगी शुरुआती पाठकों के लिए कहानी को सुनना और अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करना उतना ही सरल हो जाएगा।
- कहानी में पात्रों की संख्या ज़्यादा न हो।
- कहानी में बहुत अधिक विवरण न हों।
- कहानी किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रसित न हो।
- कहानी उपदेशात्मक न हो।
- कहानी बच्चों के परिवेश से मिलती-जुलती हो तो बेहतर है।
- छपी सामग्री का आकार बच्चों के स्तर के अनुकूल हो।
- छपाई अच्छी हो।
- किताब का कागज़ अच्छा हो।

कहानी सुनाने से पहले

बच्चों को पढ़कर कहानी सुनाने के लिए उनके अनुकूल किताब के चयन के बाद ज़रूरी है कि आप स्वयं उस कहानी को दो-तीन बार ज़रूर पढ़ें। अगर आपको कहानी में आनंद आ रहा है तो समझ जाइए कि बच्चा भी कहानी में आनंद ज़रूर लेगा। अगर आपको कहानी अच्छी नहीं लगे, तो उस किताब को बच्चों के सामने पढ़कर न सुनाना ही बेहतर है। स्वयं कहानी पहले से पढ़ने का दूसरा लाभ यह होगा कि आपको कहानी अच्छी तरह से याद हो जाएगी और ऐसा होने से पढ़कर कहानी सुनाना आपके लिए सरल हो जाएगा।

पढ़कर कहानी सुनाने से पहले कहानी पढ़ते समय यह भी विचार करते जाएँ कि आप कहाँ पर किस तरह की गतिविधि बच्चों से करवा कर सकते हैं। बच्चों से अनुमान लगाकर पढ़वाने के लिए कहानी में से शब्दों, वाक्यों, अंशों को छाँट लें।

कहानी पढ़ते समय चित्रों को ध्यान से देखकर यह भी तय कर लें आप उन चित्रों से संबंधित क्या-क्या बातें बच्चों से कर सकते हैं। कौन-सी गतिविधियाँ बच्चों से करवा सकते हैं।

कब सुनाएँ पढ़कर कहानी

पढ़कर कहानी सुनाने की सार्थकता तभी है जब बच्चे कहानी सुनने के लिए तैयार हों। कक्षा में कहानी सुनाने के लिए लचीला समय रखना बेहद ज़रूरी है। अगर बच्चों का मन खेलने का है और आपने कहानी सुनायी शुरू कर दी तो वे कहानी का आनंद नहीं ले पाएँगे। इसलिए

जब बच्चे कहानी सुनने के लिए तैयार हों तभी कहानी सुनाइए।

कैसे पढ़ें कहानी

- बच्चों को अपने पास बैठाएँ।
- कहानी की किताब अपने हाथों में इस प्रकार पकड़ें कि सभी बच्चे छपी सामग्री को बिना किसी कठिनाई के देख सकें।
- अगर कहानी के पात्रों के मुखौटे आपके पास हों, तो बच्चों को पहना दें। जैसे अगर आप जंगल के जानवरों से संबंधित कहानी बच्चों को सुना रहे हैं तो बच्चों को शेर, खरगोश आदि के मुखौटे पहनाए जा सकते हैं। बच्चों से भी जानवरों के मुखौटे बनवाए जा सकते हैं। इस कार्य में बच्चे भरपूर रुचि लेंगे। मुखौटे पहनकर कहानी सुनने में उनका आनंद भी बढ़ जाएगा।
- पढ़कर सुनाने की शुरुआत आवरण पृष्ठ से करें। अक्सर शिक्षक तथा अभिभावक आवरण पृष्ठ पलटकर सीधे कहानी पढ़कर सुनाना शुरू कर देते हैं। आवरण पृष्ठ के चित्र की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित कर उस पर बातचीत करें। किताब का शीर्षक भी पढ़ें। आवरण चित्र तथा उसके शीर्षक के आधार पर बच्चों से कहानी का अनुमान लगाने की गतिविधि भी करवाई जा सकती है।
- कहानी का आनंद लेते हुए कहानी पढ़ें। आप जितना आनंद लेकर कहानी पढ़ेंगे बच्चे भी उतना ही आनंदित होंगे।
- कहानी पढ़ते समय एक हाथ से किताब को पकड़ें तथा दूसरे हाथ की अंगुली पढ़ने के दौरान शब्दों के नीचे रखते जाएँ ताकि बच्चों का ध्यान वर्ण की आकृति की ओर जाए। इससे बाद में स्वयं अनुमान लगाकर पढ़ने में उसे मदद मिलेगी।
- कहानी पढ़कर सुनाने के दौरान इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे सक्रिय रूप से उससे जुड़े रहें।
- बाल साहित्य में कहानियों में वाक्यों का दोहराव होता है। एक बार वाक्य पढ़ने के बाद वही वाक्य आगे आने पर पहला शब्द पढ़कर बच्चों को उस वाक्य को अनुमान लगाकर पढ़ने और पूरा करने का अवसर दें। अनुमान लगाकर पढ़ने के प्रयास में मिली सफ़लता बच्चे को पढ़ने की दुनिया में प्रवेश कराएगी।
- कहानी पढ़कर सुनाने के दौरान बच्चों से उस कहानी की घटनाओं के बारे में बातचीत करें।
- आपके द्वारा कहानी पढ़ने के दौरान अगर बच्चे आपस में बात करें तो टोकिए नहीं इससे कहानी में व्यवधान आएगा। आँख या हाथ के इशारे से उन्हें बात या किसी अन्य प्रकार की शरारत के लिए रोका जा सकता है।
- बच्चे एक ही कहानी को कई बार सुनना पसंद करते हैं। इसलिए एक कहानी पढ़कर सुनाने के बाद उसी कहानी को दोबारा सुनाया जा सकता है। हर बार कहानी सुनाने के उद्देश्य अलग हो सकते हैं। पहली बार मनोरंजन के लिए सुनाई गई कहानी दूसरी बार बच्चों से अनुमान लगाकर आपके साथ पढ़ने के लिए सुनाई जा

सकती है। उसी कहानी का इस्तेमाल बच्चों द्वारा पढ़े गए शब्दों तथा वाक्यों को ब्लैकबोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखकर लिखने से सबंध स्थापित किया जा सकता है।

खत्म हुई कहानी

- कहानी सुनाने के बाद बच्चों से बातचीत करें– कहानी कैसी लगी? अच्छी लगी तो क्यों अच्छी लगी? कहानी में कौन-सी बात/पात्र सबसे अच्छा लगा। क्यों?
- बच्चों से पूछें कि अगर उन्हें कहानी के किसी पात्र का अभिनय करना हो, तो वे कौन-सा पात्र बनना चाहेंगे। क्यों?
- बच्चों से कहानी पढ़कर सुनाने को कहें। बच्चा अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करे तो उसकी सराहना करें। ताकि उसे लगे कि उसकी सफ़ल कोशिश आपको भी खुशी देती है।
- बच्चों से कहानी का अभिनय करने को कहा जा सकता है।
- कहानी जैसी बात यदि उनके परिवेश में घटित हुई हो तो उस पर बातचीत की जा सकती है।
- बच्चों की बातचीत ब्लैकबोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखते जाएँ। लिखे हुए शब्दों और वाक्यों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिलेगी कि बोली हुई बात को कैसे लिखा जाता है। यह सोचकर उन्हें अच्छा भी लगेगा कि उनकी कही बात को ब्लैकबोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखा जा रहा है। बच्चों से लिखी गई सामग्री को पढ़ने को कहें। इस कार्य में बच्चों को सहयोग और प्रेरणा दें।

पढ़कर कहानी सुनाने के फ़ायदे

शिक्षक द्वारा पढ़कर कहानी सुनाने के कई फायदे हैं–

- बच्चे पढ़ने की प्रक्रिया से अवगत होते हैं। उनमें यह समझ विकसित होती है कि पढ़ते समय हम बाँए से दाहिने ओर आगे बढ़ते हैं।
- बच्चों में छपी/मुद्रित सामग्री की अवधारणा का विकास होता है।
- सार्थक लिखित (छपी हुई) सामग्री को देखकर बच्चों में शब्दों, वाक्यों, विराम चिह्नों की पहचान तथा समझ का विकास होता है।
- बच्चे लिखित/मुद्रित भाषा की संरचना से परिचित होते हैं।
- शिक्षक द्वारा पढ़कर कहानी सुनाने के दौरान बच्चा छपी सामग्री के साथ चित्र भी देखता चलता है। इसलिए उसके लिए अनुमान लगाकर पढ़ना आसान हो जाता है।
- पढ़कर कहानी सुनने के दौरान बच्चों में जैसे-जैसे कहानी की संरचना की समझ, लिखित भाषा के स्वरूप की समझ, प्रिंट की अवधारणा का विकास होता है उनके लिए अनुमान लगाकर पढ़ना उतना ही आसान होता जाता है।

दस-बीस पृष्ठों वाली एक कहानी की किताब बच्चों को पढ़कर सुनाने पर बच्चों को यह सोचकर अच्छा लगता है कि उन्होंने पूरी किताब सुन ली। इससे उनमें किताब की

अवधारणा बनती है और यही अवधारणा उन्हें किताब के इस्तेमाल को प्रेरित करती है। पूरी किताब सुन लेने के बाद उसके मन में इच्छा होती है कि कहानी तो मैंने सुन ली। क्यों न अब मैं इसी कहानी को खुद पढ़ूँ।

एक कहानी और

कहानी पढ़कर सुनाने का उद्देश्य जहाँ बच्चों को कहानी का आनंद देना है वहीं बच्चों के छपे हुए शब्दों से पहचान, वर्णों की आकृतियों के पहचान, अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर देना और पढ़ने के लिए ललक जगाना है। इसलिए कहानी एक बार पढ़कर सुनाने के बाद बच्चों से उस किताब को स्वयं पढ़कर समझने को कहें। वही किताब दोबारा उन्हें स्वयं पढ़ने को दें। बच्चों के परिवेश से जुड़े विषयों वाली कहानी की किताबें कक्षा में रीडिंग कॉर्नर में रखें ताकि बच्चे उन्हें उठकर स्वयं पढ़ने की कोशिश करें।

बच्चे के आस-पास जितनी अधिक कहानी की किताबें होंगी उतना ही वह किताबों के संसार में रमेगा। वह चित्रों को देखेगा, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेगा। अधिक से अधिक कहानियों का आनंद लेता हुआ स्वतंत्र पाठक बनेगा जो निश्चय ही उसमें पढ़ने का कौशल विकसित करते हुए उसे स्थायी पाठक बनने की ओर ले जाएगा।

❑❑❑